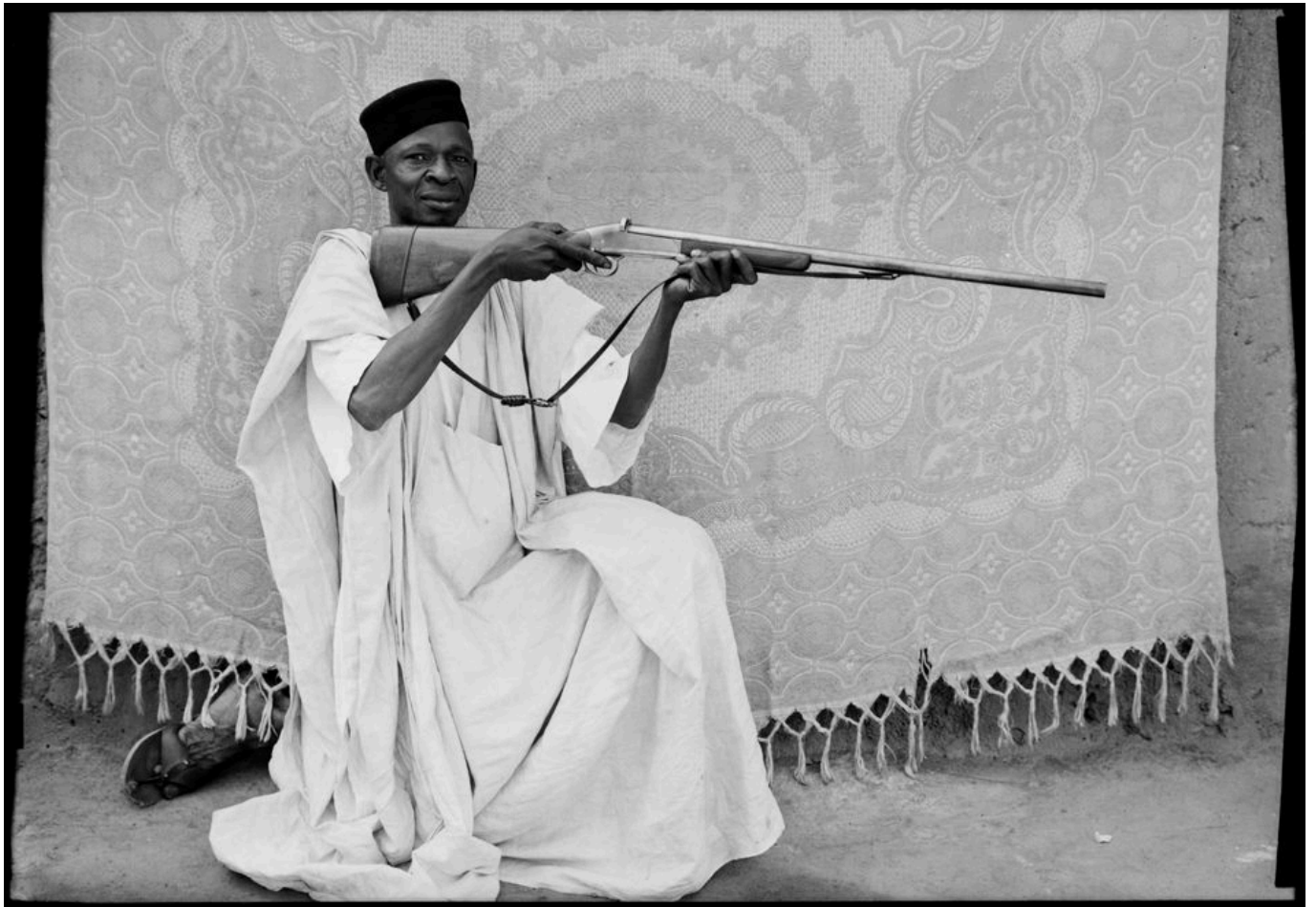


फ्रांस से माली का अलगाव ट्रान्सअटलांटिक गठबंधन में दरार का एक लक्षण है : 48वाँ न्यूज़लेटर (2022)



सेदौ कीता (माली), शीर्षकहीन, 1948-1954.

प्यारे दोस्तों,

ट्राईकॉन्टिनेंटल: सामाजिक शोध संस्थान की ओर से अभिवादन।

21 नवंबर 2022 को माली के अंतरिम प्रधान मंत्री, कर्नल अब्दुलाय मागा ने सोशल मीडिया पर एक बयान जारी कर सरकार के निर्णय की घोषणा की कि 'माली में काम कर रही [फ्रांसीसी] एनजीओ की सभी गतिविधियों पर तत्काल प्रभाव से प्रतिबंध लगा दिया जाए।' इस घोषणा से कुछ समय पहले फ्रांसीसी सरकार ने माली की आधिकारिक विकास सहायता

(ODA) यह कह कर बंद कर दी थी कि माली सरकार 'रूस के वैगनर सैनिकों से संबद्ध है' (वैगनर ग्रुप, रूस में एक निजी सैन्य कंपनी है) मागा ने कहा कि फ्रांस का दावा एक 'काल्पनिक आरोप' है और 'माली को अस्थिर व आइसोलेट करने के उद्देश्य से राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय जनता की राय मैनिप्युलेट करने का तरीका है'

उत्तरी अफ्रीका के जिन क्षेत्रों में फ्रांस का औपनिवेशिक शासन रहा था, उपरोक्त हलचल वहाँ के एक नये मूड की नवीनतम अभिव्यक्ति है। अल्जीरिया से बुर्किना फासो तक, उत्तरी अफ्रीका के देशों में (2002 में कोटे डी आइवर के साथ शुरू हुए) फ्रांस के वर्तमान सैन्य हस्तक्षेप और विभिन्न मौद्रिक व्यवस्थाओं – जैसे दिसंबर 2019 तक फ्रांसीसी ट्रेजरी के नियंत्रण में रहे सीएफ़ए फ्रैंक का मुद्रा के रूप में इस्तेमाल आदि – के ज़रिए पश्चिम एवं मध्य अफ्रीका के चौदह देशों के निरंतर आर्थिक अलगाव पर सवाल उठ रहे हैं। बुर्किना फासो और माली – दोनों सेना द्वारा शासित देश – ने हाल के वर्षों में फ्रांसीसी सैनिकों को अपने क्षेत्रों से बाहर खदेड़ा है। दूसरी ओर पश्चिम अफ्रीकी आर्थिक और मौद्रिक संघ (UEMOA) के आठ देश और मध्य अफ्रीका के आर्थिक और मौद्रिक समुदाय (CEMAC) के छह देश अपनी अर्थव्यवस्थाओं को धीरे-धीरे फ्रांसीसी नियंत्रण से मुक्त कराने के प्रयास कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, 2019 में UEMOA, पश्चिम अफ्रीकी देशों द्वारा फ्रांस की ट्रेजरी में अपने विदेशी मुद्रा भंडार का आधा हिस्सा रखे जाने की शर्त को खत्म करवाने और आर्थिक संघ के बोर्ड से फ्रांसीसी प्रतिनिधि को हटवाने हेतु, फ्रांस के साथ समझौता करने में सफल रहा। ये कदम सीएफ़ए फ्रैंक को ईको नाम की क्षेत्रीय मुद्रा से बदलने की व्यापक योजनाओं का हिस्सा था।



अबौदिया (कोटे डी आइवर), घुमक्कड़ II, 2018.

फ्रांसीसी सशस्त्र बलों की उत्तरी अफ्रीका में मजबूत उपस्थिति बरकरार है। साहेल क्षेत्र से फ्रांस की सेना केवल आंशिक रूप से वापस गई है, जबकि नाइजर जैसे देशों में फ्रांस के साथ करीबी सैन्य और राजनयिक संबंध अब भी कायम हैं। डेमोक्रेटिक सोशलिस्ट पार्टी, ला फ्रांस इंसूमिस, के नेता जीन-ल्युक मेलेनचॉन ने पिछले साल मुझे बताया था कि, 'फ्रांस में थोड़ा भी यूरेनियम नहीं है' और 'हम इसे मुख्य रूप से नाइजर और कज़ाकिस्तान से आयात करते हैं'। फ्रांस में प्रत्येक तीन में से एक लाइटबल्ब नाइजर से आए यूरेनियम से जलता है, यही वजह है कि फ्रांसीसी सैनिक देश के यूरेनियम-समृद्ध शहर अरलिट को कब्ज़ा कर रखना चाहते हैं। क्या फ्रांस के पीछे हटने को नव-औपनिवेशिक सैन्य हस्तक्षेपों और क्षेत्र में संचय की संरचनाओं के अंत के रूप में देखा जाना चाहिए? वास्तविक स्थिति कहीं अधिक जटिल

है। ये आंशिक रूप से हो रही वापसियाँ यूरोप और उत्तरी अमेरिका के बीच ट्रान्सअटलांटिक गठबंधन में तनाव के व्यापक संदर्भ में हो रही हैं। इस संदर्भ को समझने के लिए सावधानीपूर्वक मूल्यांकन की आवश्यकता है।

अक्टूबर में, मैंने मोरक्को की वर्कर्स डेमोक्रेटिक वे पार्टी के अब्दुल्ला अल हरीफ से फ्रांस और मोरक्को की राजशाही के बीच बढ़ते तनाव के बारे में बात की। पिछली गर्मियों में, दस देशों ने यूएस अफ्रीका कमांड के अफ्रीकन लायन 2022 सैन्य अभ्यास में भाग लिया था; इन अभ्यासों के आयोजन में मोरक्को भी भागीदार था। इस बड़े सैन्य अभ्यास और इस तरह के अन्य कदमों ने फ्रांस को किनारे कर दिया है; और फ्रांस खुले तौर पर इन पर अपनी नाराज़गी जता रहा है। एल हरीफ ने मुझे बताया, 'मोरक्को, संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ अपने सैन्य संबंधों को बहुत विकसित कर चुका है'।

फ्रांस के सैनिकों को क्षेत्र से खदेड़ा जा रहा है, लेकिन अमेरिकी और ब्रिटिश सेना उनकी जगह लेती दिख रही है। 2017 में, पाँच पश्चिम अफ्रीकी देशों ने साहेल क्षेत्र से इस्लामी कट्टरपंथी खतरे के विस्तार से लड़ने के लिए अकरा इनिशिएटिव का गठन किया था; उसके दो साल बाद, 2019 में, उस इनिशिएटिव के एंकर देश, घाना, ने अपने अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में वेस्ट अफ्रीका लॉजिस्टिक्स नेटवर्क नाम से एक अमेरिकी सैन्य अड्डा खोल दिया। घाना के समाजवादी आंदोलन के एक नेता, क्वेसी प्रैट जूनियर ने मुझे बताया कि 'सैकड़ों अमेरिकी सैनिकों को [वहाँ से] आते-जाते देखा गया है। ऐसा संदेह है कि वे अन्य पश्चिम अफ्रीकी देशों में और पूरे साहेल में कुछ परिचालन (ऑपरेशनल) गतिविधियों में शामिल हो सकते हैं'। नवंबर में ब्रिटिश संसद में घोषणा की गई कि ब्रिटेन अब अकरा इनिशिएटिव में भागीदारी करेगा। इस घोषणा और क्षेत्र में ब्रिटिश सैनिकों की तैनाती को लेकर घाना के भीतर वर्तमान में एक विवाद चल रहा है। हमने जुलाई, 2021 के अपने डोजियर नं. 42 'Defending Our Sovereignty: US Military Bases in Africa and the Future of African Unity' में भी बताया था कि फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच कुर्सियों का फेरबदल भले ही हो रहा है, लेकिन अफ्रीका का सैन्यीकरण लगातार जारी है।



प्रिया रामरक्खा (केन्या), ट्रेनिंग के दौरान सैनिक, 1967.

पिछले कुछ सालों में, फ्रांस के हथियार उद्योग को निर्णायक झटके लगे हैं। 2021 में, यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका ने ऑस्ट्रेलिया पर फ्रांस के साथ हुए 2016 के अनुबंध को तोड़ने का दबाव डाला। इस अनुबंध के तहत ऑस्ट्रेलिया को फ्रांस के नौसेना समूह से बारह डीजल-संचालित पनडुब्बियाँ खरीदनी थीं। अब यूएस और यूके के साथ हुए नये सौदे (AUKUS) के तहत ऑस्ट्रेलिया इलेक्ट्रिक बोट (यूएस) और बीएई सिस्टम्स (यूके) से परमाणु पनडुब्बियाँ खरीदेगा। दूसरी ओर, पिछले आठ महीनों के दौरान यूक्रेनी सेना के लिए सैन्य प्रावधान हेतु जर्मनी और अमेरिका के बीच बढ़े सहयोग के परिणामस्वरूप, जर्मनी ने यूरोप के बजाए अमेरिकी हथियार निर्माताओं से सैन्य खरीद शुरू कर दी है। उदाहरण के लिए, मार्च में, जर्मनी ने घोषणा की कि वह अब यूरोप-निर्मित टोर्नाडो लड़ाकू जेट विमानों के बजाए यूएस-निर्मित एफ-35 लड़ाकू विमान खरीदेगा। इसके अलावा, रूस पर बढ़ते यूरोपीय प्रतिबंधों की वजह से फ्रांस रूसी बाजार से भी तेज़ी से दूर हुआ है; जबकि अब तक 2014 से लागू विभिन्न प्रतिबंधों के बावजूद फ्रांस रूस को परिष्कृत सैन्य उपकरण बेचता रहा था। फ्रांसीसी हथियारों की बिक्री के लिए तीन सबसे बड़े बाजार – भारत, कतर और मिस्र – ने भी संकेत दिया है कि वे अमेरिकी और रूसी आपूर्तिकर्ताओं (दुनिया के दो प्रमुख हथियार निर्यातकों) की ओर रुख कर सकते हैं।

फ्रांस की पुरानी गालिस्ट विदेश नीति परंपरा और यूरोप-रूस संबंधों के एक यथार्थवादी परिप्रेक्ष्य के चलते फ्रांस के राष्ट्रपति, इमैनुएल मैक्रों, नॉर्मन्डी प्रारूप के ज़रिए पिछले आठ वर्षों से पश्चिमी योद्धा देशों और रूस के बीच तालमेल बिठाने का प्रयास कर रहे थे। 2016 में अपनी पुस्तक 'रेवोल्यूशन' में मैक्रों ने लिखा था कि 'रूस को यूरोप से दूर धकेलना एक गंभीर रणनीतिक त्रुटि है'। यूक्रेन में युद्ध के दौरान शक्तियों के बदले संतुलन और रूस को आइसोलेट व 'कमज़ोर' करने के अमेरिकी दबाव के कारण स्वतंत्र फ्रांसीसी विदेश नीति की ओर यह झुकाव अब पुरानी बात हो चुकी है।

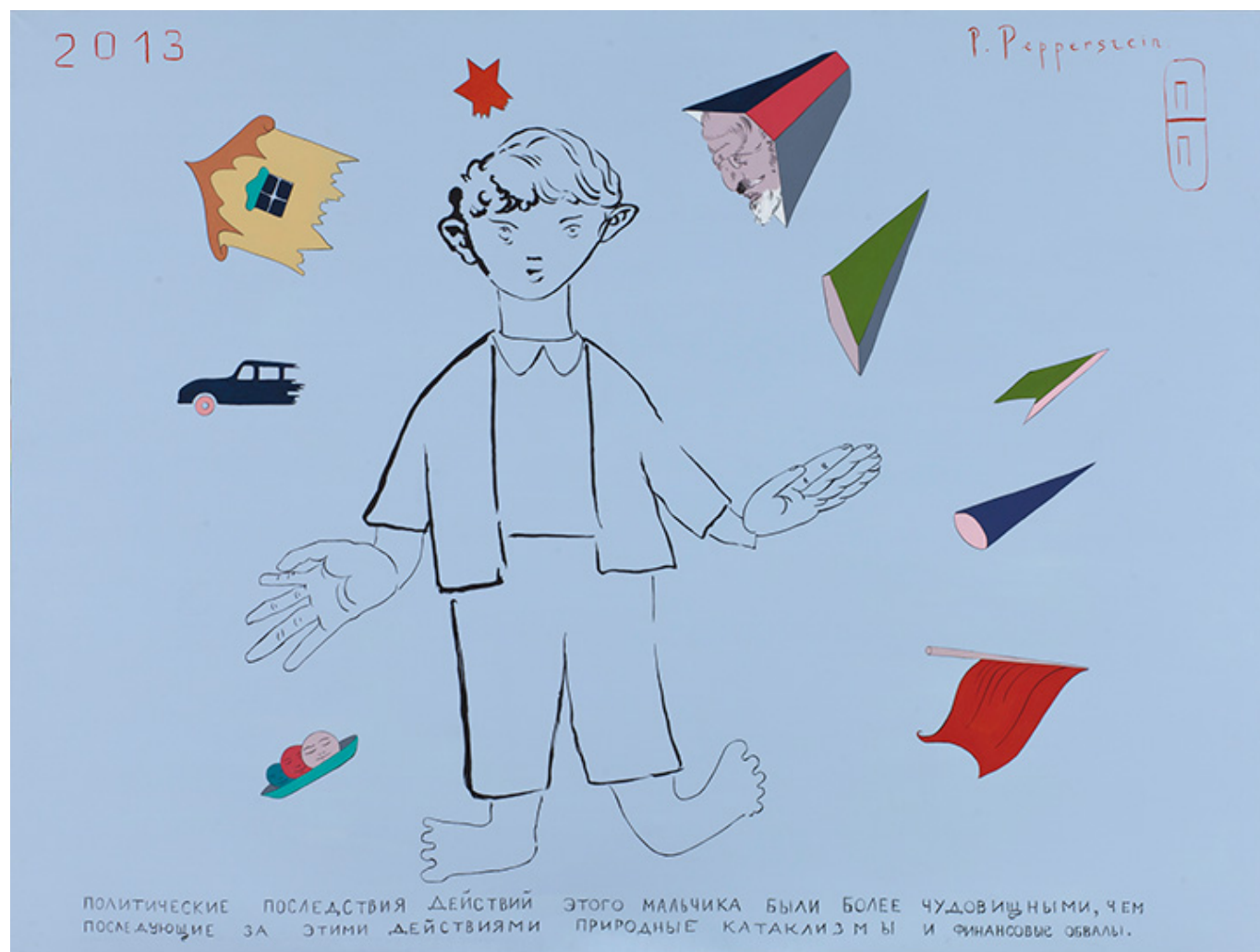
पिछले कई महीनों में, फ्रांस पश्चिम देशों में बढ़ रही रूस-विरोधी भावना का उपयोग कर यह तर्क दे रहा है कि अफ्रीका में उसका नुकसान उसके अपने नव-औपनिवेशिक कारनामों के कारण नहीं, बल्कि महाद्वीप पर रूस की 'शिकारी परियोजना' के कारण हो रहा है। एक तरफ़ मैक्रों अपने स्टैंड से पीछे हटे हैं और दूसरी ओर पूरे यूरोप के शहरों में जीवन यापन की बढ़ती लागत से उत्पन्न संकट के कारण बड़े पैमाने पर सड़कों पर प्रदर्शन हो रहे हैं। लेकिन इन प्रदर्शनों में उठ रहे नारों में तेज़ी से बढ़ती मुद्रास्फीति के कारणों के बारे में स्पष्टता से कोई बात नहीं हो रही है। यूक्रेन युद्ध के बारे में किसी स्वतंत्र यूरोपीय दृष्टिकोण का कोई संकेत नहीं दिखता, जो यूरोप की आबादी पर इस युद्ध के बोझ को हल्का कर सके।



लियोन्स राफेल एगबोडजेलू (बेनिन), एगुनगुन मैस्क्यूरेड XII, 2015.

2021 की शुरुआत में अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन ने कहा था, 'अमेरिका वापस आ गया है, ट्रांसअटलांटिक गठबंधन वापस आ गया है' इस घोषणा से दो साल पहले मैक्रों ने कहा था कि, उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो), और इस गठबंधन का आधार 'ब्रेन डेथ' से जूझ रहा है। संयुक्त राज्य अमेरिका की वापसी के बारे में बाइडेन के बयान पर मैक्रों ने सीधा-सा जवाब दिया था: 'कब तक?' पिछले दिसंबर में मैक्रों की वाशिंगटन की राजकीय यात्रा से यूरोप को अधीन बनाने की अमेरिकी मांग और अमेरिकी राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं से यूरोप के लिए स्वतंत्र रहने की ज़रूरत के बीच के तनाव का खुलासा हुआ था। इसका विकल्प – (रूस और तुर्की सहित) यूरोप और एशिया के बीच ऐतिहासिक एकीकरण

—यूरोपीय समाज को प्रमुख लाभ प्रदान करेगा; लेकिन इसे संयुक्त राज्य अमेरिका के हितों के आगे त्यागा जा रहा है।



पावेल पेपरस्टीन (रूस), कारवाइयों के राजनीतिक परिणाम, 2013.

इस बीच, पिछले एक साल में, माली के रक्षा मंत्री, कर्नल सादियो कैमारा, और वायु सेना प्रमुख, जनरल अलौ बोर्ड दियारा कई बार रूस की यात्रा कर चुके हैं; वे कथित तौर पर दिसंबर 2021 में रूस के वैगनर ग्रुप से माली तक सैकड़ों लड़ाके लाने वाले सौदे के 'वास्तुकार' हैं। माली में वैगनर ग्रुप के सैनिकों की मौजूदगी ने फ्रांस को पश्चिम अफ्रीका और साहेल में व्यापक फ्रांस-विरोधी भावना को नज़रअंदाज़ करने का बहाना दे दिया है। वे इस तथ्य पर भी ध्यान नहीं दे रहे कि महाद्वीप में उनकी सैन्य उपस्थिति की जगह ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका ले रहे हैं। अफ्रीकी महाद्वीप पर रूस की बहुत कम उपस्थिति है (हालाँकि सोची में हुए अक्टूबर 2019 रूस-अफ्रीका शिखर सम्मेलन के बाद से रूस की उपस्थिति बढ़ रही है), लेकिन पेरिस को महाद्वीप में और वास्तव में दुनिया में फ्रांस की घटती स्थिति के लिए यहाँ से उपयोगी तर्क मिल जाता है।



मालिक सिदीबे (माली), सड़क पर पिकनिक, 1972.

यह पहली बार नहीं है जब माली ने एक स्वतंत्र राष्ट्रीय परियोजना विकसित करने के लिए फ्रांस को एक तरफ धकेला है। 1960 में, माली ने अपनी स्वतंत्रता हासिल की थी, और राष्ट्रपति मोदिबो कीता संप्रभुता स्थापित करने और महाद्वीप के लिए एक पैन-अफ्रीकन राजनीति के विकास की दिशा में काम कर रहे थे। 1968 में, जनरल मौसा ट्रोरे के नेतृत्व में सेना ने कीता की समाजवादी सरकार को उखाड़ फेंका। माली में कीता के तख्तापलट के अलावा उस दौर में पूरे महाद्वीप में तख्तापलटों का दौर चला; बुरुंडी (1961 में लुई र्वागसोर के खिलाफ) और डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो (1961 में पैट्रिस लुमुम्बा के खिलाफ), टोगो (1963 में सिल्वेनस ओलंपियो के खिलाफ) और घाना (1966 में क्वामे न्कुमा के खिलाफ)।

1968 के तख्तापलट पर विचार करते हुए, कीता के संचार मंत्री, ममादौ अल-बेचिर गोलोगो ने कहा कि ट्रोरे 'फ्रांस और अन्य देशों के लिए काम कर रहे एक उपकरण के अलावा कुछ नहीं थे, जो अफ्रीका के विद्रोही समझे जाने वाले बेटों से उसे छुटकारा दिलाना चाहते थे'। हालाँकि माली को अपने विद्रोह की कीमत चुकानी पड़ी है, क्योंकि कीता के समाजवादी प्रयोगों और माली के लोगों ने इसका विरोध करना जारी रखा है। लेकिन गोलोगो ने 'माय हार्ट इज़ ए वॉल्केनो' (1961) में लिखा था कि, 'साहस और दृढ़ संकल्प पीछे हटने से रोकते हैं, चाहे कुछ भी हो जाए'। उन्होंने आगे लिखा था कि 'जीना एक साहसिक काम है जिसे बिना किसी हिचकिचाहट के करना चाहिए'।

स्नेह-सहित,

विजय।